सन्देश संख्या 339 (Hindi version)

दिनांक : अक्टूबर 11, 2017
रानीखेत

सुविधानिष्ठ नहीं सत्यनिष्ठ बनो

हिमालय स्थित रानीखेत के सुरम्य वातावरण में "हिमालयन रिट्रीट-2017" के क्रम में गुरुदेव श्री शिवेंदु लाहिड़ी ने योगीराज लाहिड़ी महाशय के जीवनकाल में घटित-घटना एवं उक्ति को बताते हुए कहा कि :-

घटना :-

एक बार लाहिड़ी महाशय के वाराणसी स्थित पुराने निवास पर एक भक्त-शिष्य मिलने आये थे। लाहिड़ी महाशय अपने आवास के जिस कमरे में रहते थे, उसमें रोशनी की कमी थी लेकिन उसके बाहर जो प्रांगण था, वहां प्रकाश था। ज्यों ही लाहिड़ी महाशय ने शिष्य के आने की खबर सुनी, वैसे ही उस प्रांगण में जहां पर्याप्त प्रकाश था वहां सूक्ष्मतापूर्वक कुछ खोजने का नाटक सा करने लगे। तत्क्षण वह भक्त भी वहां आ गए और उन्हें कुछ खोजने में परेशान देखकर पूछा "आप यहां क्या खोज रहे हैं?" लाहिड़ी महाशय ने उत्तर दिया कि एक चाभी जो मेरे जनेऊ में बंधी रहती थी वह कहीं गिर गई है, उसे ही खोज रहा हूँ। कुछ क्षण बाद उस शिष्य ने कहा कि क्या आप याद कर सकते हैं या कोई अनुमान लगा सकते हैं कि वह चाभी कहां गिरी होगी? लाहिड़ी महाशय ने उत्तर दिया- हां ! मुझे याद है कि चाभी उस अंधेरे कमरे में क्रिया करने के दौरान वहीं कहीं गिर गई है। यह सुनते ही उस शिष्य ने बड़े आश्चर्य के साथ उन्हें देखा, मानो उनकी बेवकूफी पर हँस रहा हो और कहा कि हे गुरुदेव ! जब चाभी अंधेरे कमरे में गिरी है तो फिर आप उसे यहाँ क्यों खोज रहे हैं? तब लाहिड़ी महाशय ने मुस्कुरा कर जवाब दिया यहाँ सुविधा है इसलिए खोज रहा हूं अंदर सुविधा नहीं है। मतलब ? मतलब यह कि यहाँ उजाला है इसमें खोजना आसान है, अंदर तो अंधेरा है वहां खोजने में दिक्कत है। भक्त ने कहा परन्तु जहां चाभी गिरी है वहीं खोजना होगा। यह सुनते ही लाहिड़ी महाशय ने कहा कि "तुम भी तो ऐसा ही करते रहते हो।" तुम सुविधा देखते हो, सच से तुम्हारा कोई सरोकार नहीं। तुम भी बाहरी दुनिया के चकाचौंध में अपनी छवि बनाने में लगे हो, लेकिन सच से तुम्हारा कोई वास्ता नहीं। यह सुनते ही उस शिष्य की आंखें ठहर गईं, होठ मौन हो गए और हाथ जुड़ गए। जैसे लगा कि रूपान्तरण की प्रक्रिया घटित हो गई और वह लाहिड़ी महाशय के चरणों पर गिर पड़ा। उसके अंदर रूपान्तरण की ये प्रक्रिया कोई सतही (superficial) नहीं, बल्कि उसमें गहन धार्मिकता का स्पर्श था।

घटना का संदेश :-

कभी-कभी सतगुरु को शिष्यों के अंदर प्रवेश करने के लिए या तथ्य को समझाने के लिए लीला भी करनी पड़ती है, जो लाहिड़ी महाशय ने उस भक्त के साथ किया। इस घटनाक्रम में छिपे संदेश हमें बता रहे हैं कि "भगवत्ता की चाभी" जिसे हम बाहरी दुनिया में खोज रहे हैं वह तो हमारे ही अंदर के अंधकार में खो गई है। लेकिन हम अपने अंदर खोजने के बजाय बाहर धर्म स्थानों में, विश्वास पद्धतियों में, धार्मिक पुस्तकों और तरह-तरह के धार्मिक प्रपंचनाओं में खोज रहे हैं, क्योंकि अपने अंदर "मैंपना" से उत्पन्न अंधकार में प्रवेश करने का साहस हमें नहीं है और अंधकार में खोजने का जो संघर्ष है उससे पलायन करना हमारे लिए सुविधाजनक है इसीलिए जो भगवत्ता हमारे ही अंदर छिपी है उसे वहीं छोड़ हम अपने बाहर खोज रहे हैं। इसी को इंगित करने के लिए कबीर ने कहा :-

"कस्तूरी कुंडल बसे, मृग ढूंढे बन माही ।
ऐसे घट घट राम है, दुनिया जानत नाहिं ॥"

जिस तरह मृग को यह आभास नहीं होता कि कस्तूरी उसी की नाभि में है और वह उसे ढूंढने के लिए वन-वन मारा फिरता है वैसे ही, जो राम (भगवत्ता) हमारे ही अंदर है उसे हम बाहरी दुनिया में खोज रहे हैं।

खुद में खुदा परख बिना जो भटकाव है, उस सच को हम नहीं देख पाते। हमारा मन हमेशा सत्य से पलायन कर सुविधा का चयन करता है। यह सुविधा किसी भी नाम पर हो सकती है, यहां तक कि धार्मिक बनना, साधू और सन्यासी बनना भी सत्य से पलायन होकर सुविधाजनक हो सकता है।

जीवन प्रवाह में ऐसे कई पहलू हैं जो सत्यनिष्ठ जैसे दिखते हैं परन्तु वो सत्य से परे सुविधानिष्ठ हैं।

- सुविधानिष्ठ हर आयाम में संतुलन नहीं दे सकता जबकि सत्यनिष्ठ संतुलन का ही दूसरा नाम है।
- योग के गन्तव्य को प्राप्त होने की लालसा और उसे प्राप्त करने के लिए बिना स्वाध्यय के अधिकाधिक क्रिया-अभ्यास करना, वो भी सुविधानिष्ठ के ही लक्षण हैं।
- साधना एवं योग-जीवन के क्रम में किसी भी अनुभव को अनुभूति समझने की भूल करना सत्यनिष्ठा से पलायन है।
- रोजमर्रे के प्रवाह में जो चुनौतियॉ आती हैं उनका सामना करने की बजाय पलायन करना भी सुविधा के कारण ही किया जाता है।
- "मैं" से लिप्त होकर किया हुआ कोई भी काम चाहे वह दिखने में कितना भी पवित्र क्यों ना हो, वह सुविधाजनक ही है ।
- चित्तवृत्ति के विराम के प्रति सजगता का अभाव भी सुविधानिष्ठ के ही लक्षण हैं।

अतः जिस मानसिक कारागार में हम अपने ही "मैं" की जंजीर से बंधे हैं उससे बाहर निकल आना ही सत्य है और उस "मैं" रूपी जंजीर के टूट जाने में जो "मैं" को आघात लगता है उस दर्द के साथ बने रहने के बजाए जो पलायन है, वही सुविधा है। यहां "मैं" का गिरना ही आलोक है जिसमें भगवत्ता की खोई हुई चाभी दिख सकती है इसलिए जरूरत अपने अंदर के गहन अंधकार में आलोकित हो जाने में है ना कि बाहर भटकने में ।

कुछ और संकेत :-

1. असाधारणता को उपलब्ध होने के लिए साधारण बनो|
2. आनंदमय अस्तित्व में होने के लिए मासूम बनो|
3. जीवन के स्पंदन को अनुभूत करने के लिए मन की विकृति से बाहर निकलो|
4. अंर्तजगत में जागृत होने के लिए अवधारणाओं का विसर्जन हो।
5. हर व्यक्ति स्वयं में जीवन के पवित्र हस्ताक्षर से परिपूर्ण जन्म लेता है। मैपना और इसके उपद्रव के आगमन के साथ ही सभी त्रुटियों की शुरुआत होती है।

जय 'सत्यनिष्ठ'